Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

वामनपुराण में नारी दशा

संगीता जायसवाल
शोध छात्रा, संस्कृत विभाग,
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 3 Issue 6
Page Number: 73-76

Publication Issue :
November-December-2020

Article History
Accepted : 01 Dec 2020
Published : 25 Dec 2020

सारांश– पौराणिक समाज में वर्णित सती प्रथा को स्त्री की मार्मिक दशा भी कही जा सकती है, क्योंकि पति की मृत्यु के बाद वे असहाय–सी हो जाती थी और समाज द्वारा प्रताड़ित भी की जाती थी। शायद इसी कारण वे पति के साथ चिता पर आरूढ़ हो सती होना श्रेयस्कर समझती थी। गर्भावस्था में सती होना धर्मविहित नहीं था।

मुख्यशब्द–वामनपुराण, समाज, सती–प्रथा,स्त्री, सामाजिक, पुरुष,साहित्य।

सामाजिक संतुलन में स्त्री और पुरूष दोनों का समान महत्त्व रहा है। नारी की महत्ता भार्या, जननी और परिवार व्यवस्था का मूल होने के कारण और भी अधिक हो जाती है। पुराणों में नारी का स्थान मर्यादायुक्त एवं आदर्शात्मक रखा गया है। वह न केवल पुरूष कीर पूरक है, अपितु उसे यश, विधा, शक्ति एवं सम्पत्ति का आद्य अधिष्ठान भी स्वीकार किया गया है। नारी के बिना पुरूष सृष्टि एवं पारिवारिक विकास असम्भव हैं इस तथ्य की प्राचीन भारतीय हिन्दू शास्त्रकारों ने भली भाँति महत्वपूर्ण घोषित करते हुए उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा को स्वीकार किया है। पुरूष के अर्द्धांग रूप नारी उसे शक्ति, सम्पत्ति सम्पन्न करने के साथ–साथ वह पारिवारिक एवं सामाजिक विकास का मूल स्रोत होती है।

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

वामनपुराण में स्त्री की महिमा का वर्णन बड़े ही उदात्त भाव से किया गया है। इसमें दक्ष यज्ञ के प्रसंग में उल्लेख मिलता है कि प्रजापति दक्ष ने यज्ञ कर्म में द्वादश आदित्यों एवं ऋषियों के साथ–साथ उनकी पत्नियों को भी सहभागी बनाया था। पद्मपुराण में तो स्पष्ट कहा गया है कि–

"नास्ति भार्या समं तीर्थ, नास्ति भार्या समं सुखम्।।

अर्थात् स्त्री के समान कोई दूसरा तीर्थ नहीं है, तथा भार्या के तुल्य कोई पुण्य नहीं है।

वामनपुराण में नारी का परम गुण उसकी शीलसम्पन्नता आख्यात है अर्थात् उत्तम कोटि का शील ही नारी की सबसे बड़ी निधि है। मत्स्य पुराण में एक स्थल पर निर्दिष्ट है कि शील सम्पन्न कन्या दसपुत्रों के समान है।

नारी के विभिन्न रूपों यथा– कन्या, भार्या, माता आदि को वामनपुराण में स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है।

नारीः कन्या के रूप में–

वामनपुराण में उर्वशी के जन्म से प्रसंग में उल्लिखित है कि वह सुवर्णांगी तथा सर्वांगसुन्दरी बाला के रूप में उत्पन्न हुई थी। शील सम्पन्नता ही उसका प्रधान गुण माना जाता था। कन्या शिक्षा का भी समाज में प्रचलन था तथा वे श्लोकादि की रचना भी कर लेती थी। कन्याएं विवाह से पूर्व अलंकार धारण नहीं करती थी। विवाह योग्य कन्या को उसके अनुरूप वर से ही विवाह किया जाता था। उन्हें स्वंय वर चुनने की स्वतंत्रता नहीं थी एवं अविवाहित कन्या को दूषित करना महापाप समझा जाता थ।

नारीः भार्या के रूप में–

वामनपुराण में भार्या के रूप में नारी को सदाचरण के अनुपालन एवं भौतिक एवं आध्यात्मिक सफलताओं के लिए महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है, धर्म, कर्म तथा अन्यान्य कार्यों में भार्या पुरूष की पूरक एवं प्रवृत्ति की मूल स्रोत समझी जाती थी। भार्या का परित्याग करना घोर पाप कहा गया है, कि भार्या पुरूष की सहधर्मचारिणी होती है, जिसके साथ रहकर गृहस्थ–धर्म का पालन करते हुए मनुष्य सांसारिक एवं पारलौकिक फलों को प्राप्त करता है। 'स्त्रिया विरहिता सृष्टिर्जन्तुनां नोपद्यते। स्मृतियों में पति परायणता को साध्वी स्त्री का परमगुण माना गया है, जिसके अभाव में गृहस्थ का सम्यक् अनुपालन नहीं हो सकता।

पौराणिक धर्म एवं समाज में स्त्रियों के लिए पतिव्रत धर्म का पालन करना परम धर्म माना गया है। वामनपुराण में अरून्धती एवं अनुसूया को पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली स्त्रियों में अन्यतम कहा गया है।

नारी माता के रूप में–

वामनपुराण में नारी को माता के रूप में सर्वोपरि महत्ता प्रदान की गयी है। वामनपुराण में माता अदिति के मातृत्व की प्रशंसा की गई है, जिनके उदर से भगवान् विष्णु वामन रूप में उत्पन्न हुए थे। पुराणों में मातृ–पूजा का भी वर्णन है। मत्स्य पुराण में उल्लेख मिलता है कि उमा जगत् जननी हैं, जिन्होंने कार्तिकेय को जन्म देकर सृष्टि को सौभाग्यशाली बनाया था। वामनपुराण में इन्द्र के द्वारा माता अदिति की पूजा किये जाने का वर्णन है। धर्मशास्त्रों में माता को पिता एवं गुरू की तुलना में सौ गुना अधिक पूज्य बताया गया है। आपस्तम्ब धर्मसूत्र में वर्णित है कि हर एक परिस्थिति में पुत्र को अपनी माता की सेवा करनी चाहिए, क्योंकि वह उसके लिए अधिक कष्ट सहन करती है। इसमें अन्यत्र उल्लेख मिलता है कि विधवा से विवाह करने वाले व्यक्ति के यहाँ भोजन करना वर्ज्य है। पौराणिक समान व्यवस्था में विधवा की सामाजिक दशा दुर्भाग्यपूर्ण एवं उसका जीवन विफल माना गया है। वामनपुराण में कामदेव के भस्म हो जाने पर रति अभव्य जीवन से स्पष्ट है कि विधवा स्त्रियों से वार्तालाप किया जाना भी वर्ज्य था। इस प्रकार वामनपुराण कालीन समाज में विधवा की सामाजिक स्थिति अशुभ एवं उपेक्षित माना जा सकती है।

सती प्रथा–

वामनपुराण में राजा प्रियव्रत की पत्नी सुदेवा की कथा के प्रसंग में उल्लिखित है कि पति परायण स्त्रियों के पति की चिता की अग्नि में प्रविष्ट होकर दिव्यलोकगामिनी होती है।

पौराणिक समाज में वर्णित सती प्रथा को स्त्री की मार्मिक दशा भी कही जा सकती है, क्योंकि पति की मृत्यु के बाद वे असहाय–सी हो जाती थी और समाज द्वारा प्रताड़ित भी की जाती थी। शायद इसी कारण वे पति के साथ चिता पर आरूढ़ हो सती होना श्रेयस्कर समझती थी। गर्भावस्था में सती होना धर्मविहित नहीं था।

1. कौशिक गृह्य सूत्र– 80, 3, 4
2. कौशिक गृह्य सूत्र– 51/4–14

3. आश्वलायन गृह्य सूत्र– 421–3
4. आश्वलायन गृह्व सूत्र–446–7–8
5. वामनपुराण– 17 / 42
6. वामनपुराण– 17 / 5–7
7. शतपथ ब्राह्मण– 5.3.1.10.
8. महाभारत आदिपर्व' 74.40.
9. वायु पुराण– 62.156
10. वामनपुराण– 30 / 12–13